

हमारा स्वभाव हमारे सुख-दुःख का कारण

हम अगर महीनता से देखें तो हमारे सुख-दुःख का सबसे बड़ा कारण हमारा स्वभाव ही है। अभाव ज्यादा कारण नहीं है। लोग अभाव में जी लेते हैं। बुरा स्वभाव खुद के साथ समाज को भी दुःख देता है। वह ठीक हो जाये तो सुख दे सकता है।

दूसरों का प्रभाव उधार है, मेरे काम का नहीं। ऐसी समझ से दूसरों का प्रभाव मन पर कम पड़ता है।

हमारे सुख-दुःख, हमारा हित-अहित, शुभ-अशुभ, हमारा आरोग्य-हमारे रोग, इन सभी द्वन्द्वों का मूल कारण क्या है? कर्म सिद्धान्त तो यही डंके की चोट पर कहता है 'सुखस्य दुःखस्य ना कोऽपि दाता'। सुख और दुःख का कोई और दाता नहीं होता। यह भी एक



दर्शन है। 'श्रीमद्भारतमन्त्रिणः' में हम सभी के सुख-दुःख की चार जड़ों का वर्णन है। 'काल कर्म सुभाऊ गुण घेरा'। हम सब इन चारों से घिरे हैं। कभी हम काल के कारण, कभी हमारे कर्म, कभी गुणों और कभी स्वभाव के कारण सुखी हैं, दुःखी हैं। काल एक बहुत बड़ा दंड है, पर निराश होने की जरूरत नहीं। 'भगवद्गीता' ने तो कहा, संसार में एक ही वस्तु निश्चित है, और वो है मृत्यु यानी काल और दूसरा है कर्म। आइये, हम इन्हें समझने की कोशिश करते हैं...

आज विश्व पर जो संकट है, उसके कारण भी 'मानस' के दर्शन में यह चार हो सकते हैं। एक तो, काल कारण है। कलि का इतना प्रभाव है कि अपने स्वार्थ के लिए कभी-कभी आदमी क्रूरकर्म ही जाता है। सरलता से समझना हो तो सर्दी के दिनों में हमें ठंड

लगती है; गर्मी में गर्मी; वर्षा में नमी रहती है। सब कालाधारित है। सब सम्यक रहे तो सुख; असम्यक रहे तो दुःख।

दूसरा हमारा कर्म। काल हमारे अधीन नहीं है। हम गर्मी के दिनों को वर्षा में नहीं बदल सकते, लेकिन कर्म से जो सुख-दुःख आते हैं, वे हमारे हाथ में हैं। हम सत्संग और संवाद करके एक विवेक जागृत करें... कौन से कर्म करें? कैसा कर्म करें? कैसा न करें? प्रत्येक कर्म के लिए हमें सावधान होना चाहिए और यह सावधानी आयेगी विवेक से, कि क्षीर क्या है? पानी क्या है? शुभ-अशुभ क्या है? यद्यपि कर्म की गति गहन

बंधन है सत्वगुण। सत्वगुण में हमारी समझ में तीन वस्तु हैं। 'उपनिषद्' का षट्, 'गीता' का सम् और 'रामचरित मानस' का सब, तो गुण के लिए हम स्वतंत्र नहीं हैं, इसलिए गोस्वामी जी कहते हैं कि जिसने मुझे बांधा है वही मुझे छोड़े, और कोई उपाय नहीं।

हम जिसपर बल देना चाहते हैं, वो है 'सुभाउ'। हमें लगता है कि हमारे सुख-दुःख का सबसे बड़ा कारण है, हमारा स्वभाव। अभाव ज्यादा कारण नहीं है। लोग अभाव में अच्छे से जी लेते हैं, पर कई लोगों को दूसरों का प्रभाव असहनीय लगता है। ईर्ष्या व द्वेष से वे दुःखी हैं। कोई अभाव से दुःखी है, कोई प्रभाव से दुःखी है। इससे मुक्त होने का उपाय क्या? बहुधा अभाव को हम पुरुषार्थ करके कम कर सकते हैं। दूसरे का प्रभाव उधार है, मेरे काम का नहीं। ऐसी समझ आने पर दूसरों का प्रभाव भी मन पर कम पड़ता है। हमें खुद के स्वभाव की तलाश करनी चाहिए। और बुरा स्वभाव खुद को तो दुःख देता है, समाज को भी दुःख देता है। वह यदि ठीक हो जाये तो सुख भी दे सकता है। 'रामचरितमानस' में प्रभु के स्वभाव की बहुत चर्चा है,

'जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला, सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला। जिसका स्वभाव दुश्मन को भी प्रिय लगता हो। आओ हम अपने स्वभाव की तलाश करें। राम का स्वभाव तो दुश्मनों को भी प्रिय है। ये तो हमारे मित्र हैं; ये हमारा हित करने वाले हैं। उनके अनुकूल हमारा स्वभाव हो जाये तो कर्म के हिसाब से आया दुःख, पीड़ा, रोग, विपत्ति, झेलने की हमें बड़ी ताकत मिलेगी। जीवन में उजाला ही जरूरी नहीं है, थोड़ा अंधेरा भी जरूरी है। पर हम अपने स्वभाव को सरल व सौम्य कैसे बनायें, ये अपने आप में कुछ करने की दिशा में प्रेरित करता है।

अगर हम स्वभाव को विच्छेद करें: तो स्व माना स्वयं, भाव माना हमारा दृष्टिकोण। वास्तव में हरेक आत्मा अपने आप में सरल व श्रेष्ठ भाव से परिपूर्ण है। पर बाह्य प्रभाव से प्रभावित मनुष्य उसे बाहर नहीं ला पाता। परिणामस्वरूप वो सरल व सत्व नहीं रह पाता। जहाँ सरलता व सत्यता न हो, वहाँ सुख की कामना करना बेमानी ही होगी ना! बस इतनी बात को विवेक संगत हम समझ लें कि सारे विश्व की सभी आत्माएं सत्, चित् आनंद के रूप में ही हैं, सबको अपना-अपना रोल मिला हुआ है। ये स्मृति निरंतर हमारे मानस पटल पर हो तो दुःख से मुक्त हो सकते हैं।



चक्रधरपुर-झारखण्ड। चक्रधरपुर थाना रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज पाठशाला में 'शिक्षा में राजयोग को शामिल करना समय का मांग' विषय पर आयोजित एक दिवसीय शिक्षक सम्मेलन में पीजी स्तरीय जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, चक्रधरपुर के पूर्व प्राचार्य सह उड़िया साहित्य के ज्ञाता डॉ. नागेश्वर प्रधान, ब्रह्माकुमारीज पाठशाला संचालिका ब्र.कु. मानिनि बहन, ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के सदस्य ब्र.कु. स्वरूप भाई, आदर्श माध्यमिक विद्यालय देवगांव के प्रधानाध्यापक दिलीप महतो, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (तुलसी भवन) के प्रधानाचार्य रमेश ठाकुर, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, पंप रोड के प्रधानाचार्य आनंद चंद्र प्रधान, रानी रसाल मंजरी माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका यशोदा महतो सहित अन्य शिक्षकगण व ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।



अमरोहा-उ.प्र.। पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगिता बहन।



सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में आये राज्यमंत्री दिलीप सोनकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेंद्र दीदी। साथ हैं भाजपा जिला उपाध्यक्ष आशीष दुबे, डिटॉल इंडिया के स्टेट मैनेजर संजय सिंह तथा अन्य।



हल्द्वानी-उत्तराखंड। विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित 'शौर्य जागरण यात्रा' कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किये जाने पर कार्यक्रम में उपस्थित सुरेंद्र भाटिया, बिजनेसमैन, अजय नागराज, प्रांत संगठन मंत्री, रवि देव आनंद, प्रांत अध्यक्ष, डॉ. धनीराम, संत सेवा प्रमुख विश्व हिंदू परिषद, उत्तराखंड, डॉ. शैलेंद्र, प्रांत प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि गणमान्य लोगों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. वीना बहन, नैनीताल, सुनीता बहन व ब्र.कु. नीलम बहन, हल्द्वानी।



सोनपुर-ओडिशा। 'हेल्थ, वेल बीइंग एंड स्पोर्ट्स: एजेंडा फॉर यूथ' विषय के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र एवं केन्द्रीय विद्यालय सोनपुर में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. ब्र.कु. गीता बहन, भीनमाल, राज.। इस दौरान ब्र.कु. निकिता बहन, राज., बंधबहल सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयश्री बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्नेहा बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



लुधियाना-पंजाब। पुलिस कमिश्नर एस. मनदीप सिंह संधू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरस्वती बहन। साथ हैं ब्र.कु. पवन बत्रा व ब्र.कु. गुरप्रीत सिंह।



ऊना-हि.प्र.। एडिशनल डिप्टी कमिश्नर महेन्द्र पाल गुर्जर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. बबिता बहन, ब्र.कु. अवधेश भाई एवं प्रेमलता बहन।



आमेट-राज.। सी.आई. हनुमंत सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गौरी बहन। साथ हैं ब्र.कु. पूनम बहन।